B.Ed → 1st Year

BCC 6

unit → 5

* परिवर्तन के प्रकार :- (1) आध्यात्मिक परिवर्तन
(2) सांस्कृतिक परिवर्तन
(3) आर्थिक परिवर्तन
(4) धार्मिक परिवर्तन
(5) वैज्ञानिक परिवर्तन
(6) नैतिक परिवर्तन
(7) राजनैतिक परिवर्तन

* परिवर्तन का सिद्धान्त :- (1) चक्रिय सिद्धान्त
(2) अनेकतंत्रीय सिद्धान्त
(3) रचनात्मक सिद्धान्त
(4) विकासवादी सिद्धान्त
(5) तकनीकीवादी सिद्धान्त
(6) उद्देश्यवादी सिद्धान्त
(7) अन्तर्गठनवादी सिद्धान्त
(8) प्रयोजनवादी सिद्धान्त

* चक्रिय सिद्धान्त :- इस सिद्धान्त के समर्थक स्पेंगलर तथा सोरोकिन ओसवाल्ड है। इस सिद्धान्त के अनुसार परिवर्तन का चक्र घूमते-घूमते फिर उसी स्थान पर पहुंचता है जहाँ से चलना प्रारम्भ करता है। 'Decline of the West' पुस्तक में स्पेंगलर ने लिखा है कि "संस्कृति का एक चक्र उत्पन्न होता है, जिसमें जन्म, बचपन, परिपक्वता, वृद्धावस्था, मृत्यु और ऐतिहासिक इकाइयों का बुद्धिपूर्ण पतन सम्मिलित है।" प्रत्येक प्रमुख सांस्कृतिक समूह इस प्रक्रिया

Scanned with CamScanner

से गुजरता है।

* अनेकतत्वीय सिद्धान्त :- सोरोकिन इस सिद्धान्त के समर्थक हैं। इसके अनुसार आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक आदि तत्व परिवर्तन की भूमिका का निर्वहन करते हैं।

* रचनात्मक परिवर्तन :- इस सिद्धान्त के प्रतिपादक पार्सन तथा मार्टिन हैं। ये सामाजिक व्यवस्था के दो अंग रचनात्मक और क्रियात्मक मानते हैं। इन दोनों में अति गहरा सम्बन्ध है।

* विकासवादी सिद्धान्त :- इस सिद्धान्त के पोषक स्पेंसर हैं। इनके अनुसार सामाजिक परिवर्तन क्रमिक तथा सतत विकासशील है। उनका विचार है कि मनुष्य ने सुखद अनुभूति की अपेक्षा दुखद परिस्थितियों से विकास किया तथा सामाजिक परिवर्तन ने भी इसी दिशा का अनुसरण किया है।

* तकनीकीवादी सिद्धान्त :- यह सिद्धान्त तकनीकी विकास के सिद्धान्त के नाम से भी जाना जाता है। विलियम ऑगबर्न इस सिद्धान्त के समर्थक हैं। इनके अनुसार तकनीकी विकास ही सामाजिक तथा अन्य परिवर्तनों में सहायक है।

Scanned with CamScanner

से परिवर्तन भौगोलिक दशाओं के परिवर्तन में हुए हो अथवा सांस्कृतिक साधनों में अथवा जनसंरचना की रचना या सिद्धान्तो के परिवर्तन मे अथवा, प्रसार से अथवा समूह के अन्दर ही आविष्कारों के फलस्वरूप हुए हो।"

मैकाइवर तथा पेज के अनुसार -" सामाजिक संरचना अथवा सामाजिक ढाँचे में होने वाले परिवर्तन को ही सामाजिक परिवर्तन कहते हैं।"

सामाजिक परिवर्तन को सामाजिक प्रक्रिया, सामाजिक विकास, सामाजिक वृद्धि सामाजिक क्रान्ति, सामाजिक सुधार, सामायोजन, आत्मसातीकरण तथा चक्रात्मक परिवर्तन के नाम से भी जाना जाता है। सामाजिक परिवर्तन जीवन की रीति, कार्यों मे विचार मे, तथा सामाजिक रचना या समाज के आकार मे होने वाला परिवर्तन आता है।